

SR LA Celebrating a century of enterprise

THE national capital is all set to witness an exciting art auction this week. Bid & Hammer's 'Significant Indian Paintings' auction is scheduled in Delhi on June 27 and will feature works by 'early masters and modernists'. The auction celebrates '100 Years of Enterprise' by the Dadha Group, whose range of enterprises in India, include an art gallery and the Bid & Hammer auction house in Bangalore. The upcoming auction, with its wide selection of artworks, offers collectors the opportunity of bidding for rare works by some of the biggest names in India's art world. The selection of 'early masters' include works by Hemendra Mazumdar, Rabindranath Tagore, Jamini Roy and Sailoz Mookerjee, while the 'modernists' are represented by MF Husain, Vasudeo Gaitonde, Tyeb Mehta, SHRaza, FN.Souza, KH Ara and others.

A painting by Gaitonde may be considered as leading the pack. It was almost a year ago that this artist's abstract landscape was sold for Rs 23.7 crores at a Christie's auction. In Bid & Hammer's auction, Gaitonde's work has been estimated at a modest Rs 1.8 and 3 crore. In this 1980 painting, the artist has chosen to use a palette knife in preference to brushes in his earlier paintings.

BUSINESS OF ART

SHONA ADHIKARI



HIGH HORSE: Husain's famous white horses

One of the more important and interesting works being offered is Ram Kumar's sublime 1963 oil-on-canvas from his *Varanasi* series, which has been estimated at a price between Rs.45 -75 lakh. Varanasi continues to be the theme also for Raza's 1947 oil on canvas, titled *Benaras*, which has been estimated between Rs12-15 lakh. Considering that Varanasi is now much in the news, it would not be at all surprising if both these paintings fetch higher prices.

What would an auction be without Husain? This prolific painter is seen at his best in an acrylic on canvas creation of his favourite subject — horses. Created in 1977, the work shows three white horses against an orange background and is estimated between Rs 1-1.5 crore. Husain had presented filmstar Namrata Shirod-
with some paintings, which are now being sold to

prises in India, include an art gallery and a Hammer auction house in Bangalore. The upcoming auction, with its wide selection of artworks, offers collectors the opportunity of bidding for rare works by some of the biggest names in India's art world. The selection of 'early masters' include works by Hemendra Mazumdar, Rabindranath Tagore, Jamini Roy and Sailoz Mookerjee, while the 'modernists' are represented by MF Husain, Vasudeo Gaitonde, Tyeb Mehta, SH Raza, FN Souza, KH Ara and others.

A painting by Gaitonde may be considered as leading the pack. It was almost a year ago that this artist's abstract landscape was sold for Rs 23.7 crores at a Christie's auction. In Bid & Hammer's auction, Gaitonde's work has been estimated at a modest Rs 1.8 and 3 crore. In this 1980 painting, the artist has chosen to use a palette knife in preference to brushes in his earlier paintings.

BUSINESS OF ART

SHONA ADHIKARI



HIGH HORSE: Husain's famous white horses

One of the more important and interesting works being offered is Ram Kumar's sublime 1963 oil-on-canvas from his *Varanasi* series, which has been estimated at a price between Rs.45 -75 lakh. *Varanasi* continues to be the theme also for Raza's 1947 oil on canvas, titled *Benaras*, which has been estimated between Rs12-15 lakh. Considering that *Varanasi* is now much in the news, it would not be at all surprising if both these paintings fetch higher prices.

What would an auction be without Husain? This prolific painter is seen at his best in an acrylic on canvas creation of his favourite subject — horses. Created in 1977, the work shows three white horses against an orange background and is estimated between Rs 1-1.5 crore. Husain had presented filmstar Namrata Shirodkar with some paintings, which are now being sold to raise funds for the Heal-a-Child Foundation espoused by Namrata's husband, Telugu star Mahesh Babu.

The auction will also offer 'important works from the estate of Nandalal Bose,' and it is one of the works of this eminent Bengal School artist that has now become the focus of a controversy. It has been said that the painting listed as being auctioned is similar to a painting which is part of the Nandalal Bose collection at the National Gallery of Modern Art, New Delhi. The only difference being that the one being auctioned is in full colour while the painting at NGMA is in monochrome. I believe it is pertinent to mention here, that artists are known for doing a sketch first in monochrome and later, if they are happy with the outcome, to repeat the same subject in colour.

Other art works at the auction include works from an art collection bequeathed in its entirety to her grand-daughter, by renowned social worker and freedom fighter, Radha Devi Goenka. Also worth seeing will be the works from the private collection of Varsh & Dinesh Thacker, known for their keen interest in art. And while it seems unfortunate that the Bid & Hammer auction has managed to stir up an unnecessary controversy, it might well serve to make the event more interesting.

(The writer is an author and a former art gallery owner)

री

ते हैं रोपवे कैसे-कैसे

ट्रियां शुरू हो गई हैं। अगर आप अभी तक कहीं गए नहीं जाने की योजना बना रहे होंगे। ऐसे में अगर हम आपको मशहूर रोपवे के बारे में बताएं तो कैसा रहे! कौन जाने यह आपका मूड बदल जाए और आप इनमें से किसी का आनंद उठाने का फैसला कर ही बैठें:



स्काईलाइन सेवा का लुत्फ: अगर आप लंदन जा रहे हों तो यह जानकारी खास आपके लिए है। वहां टेम्स नदी के ऊपर से गुजरती केबल कार बड़ा हसीन दृश्य बनाती है। इस सेवा की शुरुआत का मकसद हालांकि 2012

लेंपिक्स के दौरान सड़कों पर ट्रैफिक का बोझ कम करना था, गिनियों के लिए एक प्रमुख आकर्षण बन चुकी है। इसमें बैठकर हर का 360 डिग्री व्यू ले सकते हैं।

ने किया मशहूर: रियो डी जनेरियो में रों वाली यह केबल 65 यात्रियों को मीटर का सफर तय केबल कार सेवा है। यह 1912 से है। 1972-73 में और 2008 में दूसरी नर्मिमाण किया गया।



स बॉन्ड की फिल्म एक अहम सीन यहां फिल्माया गया था। फिल्म के इस सीन ने त में चार चांद लगा दिए।



केबल कार में रेस्तरां: स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम की स्काईवे स्काईव्यू सेवा दुनिया भर के सैलानियों की पसंद बनी हुई है। इसके जरिए आप समुद्र की सतह से 130 मीटर की ऊंचाई से पूरे स्टॉकहोम की दिलकश झांकी ले सकते हैं। दो केबल कारों के बीच का अंतर 10 मिनट का होता है और यह पूरी यात्रा आधे घंटे की होती है। केबल कार से जुड़े रेस्तरां और कैफे की बदौलत यह शानदार यात्रा और भी मजेदार हो जाती है।

हमारी कला का परचम दुनिया भर में लहराएगा

सैयद हैदर रजा देश के उन बड़े कलाकारों में से एक हैं जिनकी पेंटिंग्स पूरी दुनिया में सराही जाती हैं। 92 साल की उम्र में भी उनका हौसला देखने लायक है। आज भी पूरी सक्रियता के साथ वह अपने काम में लगे रहते हैं। कई पुरस्कारों से सम्मानित यह कलाकार सत्य को पहचान कर उसी में रम गया है। रजा फाउंडेशन को मजबूती प्रदान करते हुए वे पंचतत्व पर काम करना चाहते हैं, क्योंकि इन तत्वों से ही यह संसार बना है। प्रस्तुत है उनसे **संध्या रानी** की बातचीत:

भारत लौटने का विचार आपने कैसे बनाया?

फ्रांस में 60-70 साल रहने के बावजूद अपने वतन को मैं एक पल के लिए भी नहीं भूला। हर साल मैं कुछ समय के लिए भारत जरूर आता था। मैं वहां बहुत महत्वपूर्ण काम कर रहा था। उसे हर हाल में पूरा करना था। यह भी देखना था कि विश्व कला क्या है और भारतीय कला को क्या होना चाहिए। ये काम पूरा करने में समय लग गया। इसके अलावा वहां पर एक बहुत ही खूबसूरत लड़की मिल गई। वह चित्रकार थी। उससे मेरा विवाह हो गया। वह अपने परिवार की इकलौती लड़की थी। उसकी मां ने कहा- बेटी मेरी एक ही बेटी है। तुम यहीं रहो। उनको दुख न पहुंचे, इसलिए 15-16 साल वहां ज्यादा रुकना पड़ा। दुर्भाग्यवश उनका देहांत 2002 में हो गया। वहां स्प्रिचुअल और इंटरलैक्चुअल रिलेशन के अलावा कुछ नहीं था। मेरी कोई संतान भी नहीं थी। मैंने सोचा कि अब अपने देश लौटना चाहिए। उनके मरने के आठ साल के बाद 2010 में मैं भारत लौटा।

कैसी रही वापसी? अब तो आप यहीं रम गए हैं...

मेरा लौटना बहुत रचनात्मक और फायदेमंद रहा। हालांकि मेरी यह उम्र और बदली हुई स्थितियां कभी-कभी मुश्किल भी खड़ी करती हैं, फिर भी मैं यहां आकर बहुत खुश हूँ। भारत एक महान देश है। अब मैं यहां जम गया हूँ।

रजा फाउंडेशन स्थापित करने के पीछे असल मकसद क्या है?

चित्रकार एम एफ हुसैन, तैयब मेहता और सूजा ने जो काम किया है, वह बेहतरीन है। और भी बहुत से चित्रकार हैं जो अच्छा काम कर रहे हैं। उनमें से कुछ चित्रकार यह जानते हैं कि उन्हें किस दिशा में जाना चाहिए, पर कुछ चित्रकार ऐसे हैं जो कन्फ्यूजन में हैं कि क्या करें। जब कभी युवा चित्रकारों से मिलने का मौका आता है तो



Pradyut

सप्ताह का इंटरव्यू

सैयद हैदर रजा

बातचीत करने के लिए समय बहुत कम मिलता है। एक दिन मैंने सोचा कि क्यों न एक ऐसी संस्था बनाई जाए, जहां कला के सभी विधा के लोग एक साथ मिलकर संस्कृति के बारे में सोचें। उसी दरम्यान यह आइडिया आया और रजा फाउंडेशन बना। हालांकि मैं अपना नाम नहीं देना चाहता था, लेकिन सभी ने कहा कि आपको अपना नाम देना चाहिए। इससे अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

दिल्ली में समकालीन कलाओं का संग्रहालय भी तो आप बनाना चाहते हैं...

मैं नहीं बना रहा हूँ। फाउंडेशन बना रहा है। भारत में सांस्कृतिक जागृति है। नृत्य, संगीत, लेखन, कविता और चित्रकारी में बहुत काम हो सकता है। मेरी इच्छा है कि इस दिशा में कला की सभी विधाओं से जुड़े हुए युवाओं को सही मार्ग दिखाएं ताकि वे रचनात्मक दिशा में आगे बढ़ सकें।

भारतीय कलाकारों में आप किन्हें पसंद करते हैं?

कई चित्रकार हैं जिन्हें मैं खूब पसंद करता हूँ। वे सभी हमारे पीढ़ी के चित्रकार हैं। जैसे तैयब मेहता, अमृता शेरगिल, गायतोंडे, राम कुमार, अकबर पदमसी और कृष्ण खन्ना। कुछ युवा चित्रकार भी हैं, जिनको मैं पसंद

कुछ चित्रकार यह जानते हैं कि उन्हें किस दिशा में जाना चाहिए, पर कुछ ऐसे हैं जो कन्फ्यूजन में हैं कि क्या करें। एक दिन मैंने सोचा कि ऐसी संस्था बनाई जाए, जहां कला की सभी विधाओं के लोग मिलकर संस्कृति के बारे में सोचें। उसी दरम्यान यह आइडिया आया और रजा फाउंडेशन बना।

करता हूँ, जैसे संजीव भोसकुटे, सुजाता बजाज।

नई पेंटिंग्स में किन विषयों पर काम करना चाहते हैं?

मैं पंचतत्व पर काम करना चाहता हूँ। बचपन से ही शिक्षकों ने जो मार्ग मुझे दिखाया है, उसी पर 60-70 साल से काम कर रहा हूँ। अब भी उसी पर काम करना चाहता हूँ, क्योंकि पंचतत्व से ही संसार बना है। इसीलिए सत्य कहां छुपा है, उसकी खोज करनी चाहिए।

आपकी कलाकृतियों में बिंदुओं को गहरे आकर्षक रंगों में रखा गया है। क्या इसका कोई गहरा आध्यात्मिक महत्व है?

हां। जैसे हम बिंदु को आत्मा समझकर रंगों के माध्यम से पहचानते हैं, उसी तरह रंगों के माध्यम से आत्मा की ओर जाते हैं। रंगों को समझकर ही उपयोग करना चाहिए, क्योंकि उसके माध्यम से हम आत्मा की ओर बढ़ सकते हैं। अगर चित्रकार इस चीज को नहीं समझता तो वह आत्मा की ओर नहीं जा सकता।

भारत में कला, कलाकार की स्थिति और भारतीय कला के भविष्य पर क्या कहेंगे आप?

इन दिनों महत्वपूर्ण और सामान्य, दोनों तरह का काम कला में हो रहा है। जहां अच्छा काम होता है वहां मुझे बहुत खुशी होती है और जहां बेकार होता है, ठीक नहीं लगता। अपनी समझ से हर किसी को निर्णय करना चाहिए कि चित्रकार अपना काम ठीक से कर रहे हैं या नहीं। आधुनिक भारतीय कला का भविष्य बहुत ही उज्ज्वल है। मुझे पूरा यकीन है कि देश में ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में आधुनिक भारतीय कला का परचम लहराएगा।

रीडर्स मेल

कटुता धूल जानी चाहिए

चुनाव प्रचार के दौरान ममता बनर्जी और मोदी के बीच शब्दों के ऐसे बाण चले जो कटुता बढ़ाने वाले थे लेकिन अब चुनाव के नतीजे आ चुके हैं और देश मोदी को प्रधानमंत्री चुन चुका है। अब ऐसे में प्रधानमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह का बहिष्कार कर ममता टकराव की राजनीति को उस रास्ते पर ले जाना चाह रही हैं ज राजनीतिक विरोध व्यक्तिगत शत्रुता का रूप लेता दि रहा है। मुद्दों को लेकर केन्द्र और राज्यों के बीच टकर होता रहा है, आगे भी होगा। लेकिन इसके ये मायने नहीं कि कोई निर्वाचित मुख्यमंत्री, किसी निर्वाचित प्रधानमंत्री को प्रधानमंत्री मानने से इनकार कर दे। ममता जिस राह पर चल रही हैं, उसका समर्थन शाय ही कोई करे। उनके इस कदम का वे राजनीतिक दल भी समर्थन नहीं करेंगे जिन्होंने मोदी के बारे में ममता भी अधिक कटु शब्दों का इस्तेमाल किया होगा। चुनाव प्रचार की गर्मी के दौरान राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप व्यक्तिगत आक्षेप तक भी पहुंच जाते हैं, लेकिन नतीजे आने के बाद वह कटुता धूल जानी चाहिए।

प्रथमेश सिंह, ई

विफल नहीं

संपादकीय 'याद आएं मनमोहन' (15 मई) पढ़ा। यह अलग बात है कि अपने दूसरे कार्यकाल में डॉ. सिंह एक प्रभावहीन नेता के रूप में सामने आए। लेकिन चाहे 1991-96 के दौर में वित्त मंत्री की जिम्मेदारी हो या पिछले दस वर्षों से प्रधानमंत्री की, इस मानदंड पर उन्हें विफल नहीं कहा जा सकता। नेता अरुण जेटली भी अपने ब्लॉग में लिखा है कि जब कभी डॉ. सिंह के साथ किसी गंभीर विषय पर चर्चा हुई तो उनकी विद्वत्ता ही सामने आई।

राधेश्याम पाठक, जगत

बड़ी चुनौती

मोदी सरकार के सामने बड़ी चुनौतियों में से एक अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाना होगी। विनिवेश के घटते जाने से जीडीपी विकास दर 9 फीसदी से 4.5 प्रतिशत तक आ गई है। निजी और कॉरपोरेट सेक्टर भी यही हाल है। इस प्रकार से नई सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह हो जाती है कि वह विकास दर को कम से कम 7 फीसदी पर लाए। इसके लिए सभी क्षेत्रों में निवेश बढ़ाने की तत्काल जरूरत है।

संजय मृदुल, ईमे